'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 22 | 4 फरवरी 2018 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्रद्धापूर्वक मनाई संघ के प्रणेता की जयंती

'गीता ज्ञान के प्रसारण को आए थे तनसिंह जी'

गीता के चौथे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'इस गुह्यतम ज्ञान को सृष्टि के आरंभ में मैंने सूर्य से कहा, सूर्य ने मनु से कहा, मनु ने इक्ष्वाकु से और इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना। इसके पश्चात् इसका लोप हो गया, वही ज्ञान आज मैं तुम्हें दे रहा हूं।' मेरा यह मानना है कि महाभारत के बाद वह ज्ञान पुनः लुप्त होने लगा था, पूज्य तनसिंह जी उसी ज्ञान की पुनर्स्थापना के लिए हमारे बीच आए। देश की राजधानी दिल्ली में 25 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयंती के अवसर पर उपस्थित सहयोगियों एवं स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि 28 दिसम्बर 1962 को गुजरात के वीरेश्वर नामक स्थान पर एक शिविर के दौरान झरने के किनारे बैठकर पूज्य तनसिंह ने एक गीत लिखा 'मैं निर्झर हूं पर्वत के बह।' यह गीत उनके प्राकट्य को स्पष्ट करता है। उन्होंने लिखा है कि 'हारे अर्जुन को कर्म योग का पाठ पढ़ाने आया हूं' और यही संदेश गीता का संदेश है। वे लिखते हैं कि 'सफल बनूं या नहीं बनूं, मैं फिर भी बहता जाता हूं।' यहीं तो गीता का निष्काम भाव है। इस गीत की एक-एक पंक्ति में उन्होंने अपने व्यक्तित्व को प्रकट किया है और यही उनके धरती पर आने का कारण है। उनके जीवन व्यवहार से गीता का ज्ञान प्रकट हुआ। उपस्थित बंधुओं से अनौपचारिक चर्चा करते हुए संघ प्रमुख श्री ने बताया कि मैंने अपने जीवन में उनके जितना जागृत व्यक्ति नहीं देखा। सामान्य जीवन व्यवहार में हर प्रकार के खर्च व आय का हिसाब रखते थे। यहां तक कि सरकार के खर्च पर होने वाली रेल यात्राओं का भी हिसाब रखते थे। एक बार उनसे उन पर होने वाले सरकारी खर्च (सांसद रहते हुए) का हिसाब रखने का कारण जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसके कृतज्ञ होने की क्षमता से मापी जाती है। हम पर किस-किस का ऋण है यह हमें सदैव याद रखना चाहिए। मुझे यदि किसी ने एक गिलास पानी भी पिलाया है तो उसका ऋण मुझे याद रहता है। संघ प्रमुख श्री ने स्वयंसेवकों के आग्रह पर पूज्य तनसिंह जी के जीवन से जुड़े अनेक संस्करण सुनाए। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी व नारायणसिंह जी रेड़ा के संबंधों की चर्चा करते हुए उपस्थित समाज बंधुओं की जिज्ञासा पर नारायणसिंह जी के जीवन में घटित यौगिक क्रियाओं के संस्मरण सुनाए। योग की चर्चा चलने पर उन्होंने पतंजलि के अष्टांग योग को विस्तार से समझाया। संघ की साधना किस प्रकार इस योग पर आरूढ़ करती है, इसे भी बताया।

बाड़मेर संभाग के भियाड़ में वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली के सानिध्य में जयंती समारोह आयोजित हुआ। कमलसिंह ने कहा कि जगतरूपी रात्रि में संयमी पुरुष जागते हैं और जो जागते हैं वे ही स्वयं की व संसार की रक्षा करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही प्रयास है, यह अधःपतन की ओर उन्मुख संसार को ऊर्ध्वमुखी बनाकर श्रेष्ठता के अर्जन के मार्ग पर आरूढ़ करता है। उन्होंने कहा कि हमारे जाज्वल्यमान इतिहास की रक्षा करने के साथ-साथ कर्तव्य मार्ग पर चलकर नया इतिहास बनाना है। कर्तव्य भाव से किया हुआ कर्म निष्काम कर्मयोग बन जाता है। केन्द्रीय कार्यकारी प्रकाशसिंह भुरटिया ने कहा कि कर्तव्य भाव की शिक्षा किसी काल विशेष के सापेक्ष नहीं होती और संघ उसी शिक्षा की पाठशाला है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

प्रताप युवा शक्ति ने किया रक्तदान

प्रतिवर्ष भी भांति जयंती के अवसर पर इस बार भी प्रताप युवा शक्ति द्वारा रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कार्यालय जयपुर में आयोजित शिविर में निःशुल्क रोग जांच की व्यवस्था भी की गई। 21 जनवरी को आयोजित इस शिविर में सैंकड़ों यूनिट रक्त का संग्रहण किया गया। इसी दिन जयपुर के मालवीय नगर स्थित चामुंडा माता मंदिर में भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुंबई में भूलेश्वर स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़ कर रक्तदान किया। विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी भी रक्तदाताओं के प्रोत्साहन हेतु पहुंचे। पूणे में तीन स्थानों पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 230 युवाओं ने रक्तदान किया। बाड़मेर शहर में भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सीकर व मदुरई में भी रक्तदान किया गया।

भियाड़

सप्ताह के रूप में मनाया जयंती महोत्सव

इस बार अनेक स्थानों पर 21 जनवरी से 28 जनवरी तक जयंती सप्ताह मनाया गया। जयपुर संघ शक्ति कार्यालय में माननीय संघ प्रमुख श्री के कर कमलों से रक्तदान शिविर के आगाज के साथ जयंती सप्ताह प्रारम्भ हुआ और 28 जनवरी तक विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम संपन्न हुए। जालोर संभाग में पूरे आठ दिन का कार्यक्रम बनाया गया जिसमें प्रतिदिन विभिन्न शाखाओं में कार्यक्रम आयोजित किए गए। 21 जनवरी को जालोर प्रांत की चांदना शाखा में कार्यक्रम हुआ वहीं पाली प्रांत में सोजत मंडल की विभिन्न शाखाओं में कार्यक्रम रखे गए। 22 जनवरी को गोड़वाड़ प्रांत की खिंदारागांव शाखा में कार्यक्रम हुआ वहीं 23 जनवरी को सायला प्रांत के जीवाणा में कार्यक्रम रखा गया। 24 जनवरी को जसवंतपुरा के निकट पूरण शाखा में कार्यक्रम रखा गया। 25 जनवरी को पाली शहर, बेदाणा, छोटी रानी आदि शाखाओं में कार्यक्रम हुए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भंवर जितेन्द्रसिंह का स्वागत

कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री भंवर जितेन्द्रसिंह अलवर का 22 जनवरी को राजपूत सभा जयपुर में राजपूत व रावणा राजपूत संघर्ष समिति द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर भंवर जितेन्द्रसिंह ने कहा कि राज्य में होने वाले उप चुनावों में संघर्ष समिति द्वारा कांग्रेस के समर्थन की घोषणा करने से कांग्रेस के पक्ष में माहौल बना है एवं वे इसके लिए पार्टी की तरफ से समाज का आभार व्यक्त करते हैं। उन्होंने विगत समय में घटी विभिन्न घटनाओं में समाज के प्रति सरकार के रवैये की आलोचना की एवं कहा कि सरकार समाज के नेताओं को अवैध रूप से दबाने का प्रयास कर रही है। बैठक को संघर्ष समिति के अध्यक्ष गिरिराज सिंह ने भी संबोधित किया। इस बैठक में संघर्ष समिति में शामिल विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों के अलावा कांग्रेसी नेता धर्मेन्द्रसिंह राठौड़, विक्रमसिंह मूंडरु, सत्येन्द्रसिंह राघव आदि लोग भी उपस्थित थे।

गौरक्षक पनराज जी का मेला संपन्न

जैसलमेर जिले के सीमावर्ती गांव पनराजसर में माघ शुक्ल दशमी को गौरक्षक झुंझार पनराज जी का मेला सम्पन्न हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने अपने लोक देवता के दर्शन कर जीवन में खुशहाली की कामना की। मंदिर समिति के संरक्षक गोवर्धनसिंह तेजपाला के अनुसार मेले की पूर्व संध्या पर रात्रि जागरण रखा गया एवं मेले में आए श्रद्धालुओं के लिए प्रसादी की व्यवस्था मंदिर समिति द्वारा की गई।

पांचोटा में वार्षिकोत्सव

जालोर के पांचोटा गांव स्थित नागणेशी मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव एवं 18वां सिंधल राठौड़ प्रतिभा प्रोत्साहन समारोह प्रतिवर्ष की भांति बसंत पंचमी को संपन्न हुआ।

समारोह में प्रतिवर्ष की भांति विगत सत्र में 10वीं, 12वीं व ऊपर की कक्षाओं में 60 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों, राजकीय सेवाओं में चयनित प्रतिभाओं के साथ समाज में सक्रिय सहयोग करने वाले समाज बंधुओं को सम्मानित किया गया। समारोह को कंवला महंत हरिपूरी, धूंबड़ा महंत राज भारती आदि संतों के सानिध्य में महेन्द्रसिंह मांगलिया गुड़ा, मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष लालसिंह धानपुरा, प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के अध्यक्ष परबतसिंह आकोरापादर आदि ने संबोधित किया। प्रतिभाओं के लिए पुरस्कार की व्यवस्था सूर्यवीरसिंह पांचोटा द्वारा की गई।

पद्मावत, मीडिया और विरोध

सम्पूर्ण भारत में विरोध के बावजूद 25 जनवरी को पद्मावत फिल्म रिलीज हो गई। कुछ राज्यों ने प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया लेकिन सुप्रीम कोर्ट द्वारा अभिव्यक्ति के अधिकार के तहत दी गई व्यवस्था के कारण वे प्रतिबंध बेमानी हो गए। फिर भी राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि राज्यों में सिनेमाघर मालिकों के सहयोग के कारण फिल्म नहीं चल सकी। मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत काव्य को आधार मानकर बनी फिल्म में उस काव्य की कहानी को भी नकार दिया गया और महारानी पद्मनी को अलाउद्दीन खिलजी के यहां राणा रतनसिंह को छुड़ाने के लिए जाते हुए बता दिया गया जबकि मूल इतिहास एवं पद्मावत काव्य दोनों में ही महाराणी पद्मनी को किले से बाहर जाना ही नहीं बताया गया। इस प्रकार इतिहास के घटनाक्रम को बदल कर अपने व्यवसायिक हित साधन हेतु महारानी पद्मनी के त्याग एवं सतीत्व पर प्रश्न चिह्न लगाना है और साथ ही समाज की संघर्ष समिति को रिलीज से पहले दिखाने के वादे से मुकरना विश्वास तोड़ना है। इसी बात को लेकर पूरा समाज आज भी आक्रोशित है। इसी आक्रोश का प्रकटीकरण विरोध प्रदर्शनों के रूप में हुआ और कुछ छुट-पुट घटनाओं के अलावा बिना अवरोध विरोध संपन्न हुआ। लेकिन देश के मीडिया और विशेष रूप से इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा समाज की जो नकारात्मक छवि पेश की गई वह हमारे समाज के प्रति उनकी नकारात्मक एवं ओछी मानसिकता का प्रदर्शन है। लेकिन इस प्रकार की मानसिकता के कुटिल लोगों से बिना किसी योजना के केवल अपना झंडा ऊंचा करने की चाहत में हम संघर्ष में प्रवृत्त होंगे तो परिणाम वहीं होंगे जो विगत वर्षों में हो रही घटनाओं में हो रहे हैं। ऐसे में विचारणीय यह है कि समाज केवल भावनाओं में बहकर इसी प्रकार अपने पराए लोगों के हाथों ठगा जाता रहेगा या रुककर ठहरकर जरा विचार करेगा कि औरंगजेब के जमाने से भी कुटिल लोगों के जमाने में किस प्रकार हम हमारी अस्मिता को बचाकर आगे बढ़ सकते हैं। अंत में यह भी विचारणीय है कि हारना और हार मानना दो अलग-अलग बातें हैं। हारना स्वाभाविक है पर हार मानना उससे कहीं घातक है क्यों कि उससे उपजी निराशा आत्मघाती हो जाती है। इसीलिए आवश्यक है कि हम हार मानकर निराशा में अपना संतुलन खोये बिना उचित निर्देशन में अपने अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करने के मार्ग पर आरूढ़ होवें।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

जयपुर का निर्माण

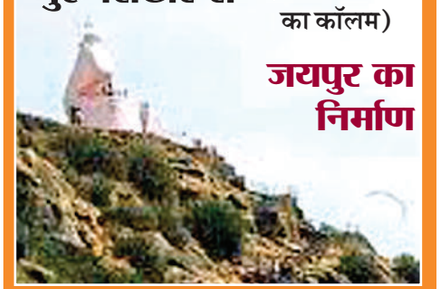

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

आमेर कच्छवाहों की सुप्रसिद्ध राजधानी रहा। राजा मानसिंह ने अकबर के युद्ध में सेनापति की भूमिका में उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक परचम फहराया। आमेर किले में भव्य राजप्रसाद बनाए। मिर्जा राजा जयसिंह महान ज्योतिषाचार्य, गणितज्ञ व शिल्पशास्त्री थे। उन्होंने आमेर के दीवाने आम एवं शीशमहल बनवाया। प्रसिद्ध कवि बिहारी ने उनके राज दरबार में रहकर बिहारी सतसई की रचना की। कवि नित्य मिर्जा राजा को एक नया दोहा सुनाकर एक स्वर्ण मुद्रा प्राप्त करता था। 1700 ई. में आमेर की राजगद्दी पर राजा जयसिंह द्वितीय बैठे। मुगल काल में उनकी नियुक्ति दक्षिण में रही। वे मालवा के प्रसाशक भी रहे। मराठों के खेलना दुर्ग को भी उन्होंने विजय किया। ओरंगजेब ने उन्हें सवाई की पदवी प्रदान की। तब से ही यहां के राजा सवाई की पदवी अपने नाम के आगे लगाते आ रहे हैं। सवाई जयसिंह द्वितीय वीर राजनीतिज्ञ होने के साथ विद्यानुरागी भी थे। अरबी, संस्कृत, फारसी एवं यूरोपीय भाषाओं के अनेक ग्रन्थ उनके संग्रह का हिस्सा थे। उन्होंने अनेक समाज सुधार के कार्य किए। उन्होंने जजिया कर माफ करवाया। महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 17 नवम्बर 1727 के शुभ मुहूर्त में जयुपर नगर की नींव पंडित जगन्नाथ सम्राट के ज्योतिष ज्ञान के आधार पर लगवाई और अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान कर महाराजाधिराज का विरुद अर्जित किया। उन्होंने दिल्ली, मथुरा, वाराणसी, उज्जैन एवं जयपुर में वैध शालाएं (जन्तर-मन्तर) बनवाई। जगन्नाथ सम्राट, केवलराम औदुम्बर, रत्नाकर पुण्डरीक, बृजनाथ, गोकुलनाथ भट्ट श्रीकृष्ण भट्टा आदि विद्वान उनके दरबार में विशिष्ट रत्न थे। जो तेलंगाना, काशी, मराठवाड़ा, बंगाल आदि से आकर यहां बसे थे। राजाराम उनके प्रधानमंत्री तथा दलाराम अभियन्ता थे।

जयपुर नगर की निर्माण योजना के लिए दूर देशों से मानचित्र मंगाए गए। चीन व बगदाद (ईराक) नगरों के नियोजन सिद्धान्तों की सहायता ली गई। मानचित्रों में परिवर्तन व परिवर्धन संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु राज्य के कुशल शिल्पशास्त्री दीवान विद्याधर और आनन्दराम मिस्त्री की सहायता ली गई। महान दार्शनिक एवं वैज्ञानिक कॉपरनिक्श, गेलेलियो और पुर्तगाल के इमानुएल से विचारों का आदान-प्रदान किया। उन्होंने अपने ज्योतिषियों एवं विद्वानों को अध्ययन के लिए पुर्तगाल भेजा एवं वहां के ज्योतिषी जेवियर डी सिल्वा को जयपुर बुलाया। विद्याधर ने नगर को नवग्रहों के आधार पर नवनिधियों में विभक्त किया, जिन्हें चौकड़ियों का नाम दिया। ऊपर से देखने पर यह विभाजन शतरंज के सदृश दिखाता है। उत्तर की चौकड़ी में राजमहल एवं शासकीय भवन बनाए गए। चौकड़ी रामचन्द्रजी, चौकड़ी गंगापोल, तोपखाना हजूरी, घाट दरवाजा, चौकड़ी विश्वेश्वरजी, चौकड़ी मोदीखाना, तोपखाना आदि नाम चौकड़ियों को दिए गए। इसके पूर्व में सूरजपोल एवं पश्चिम में चांदपोल द्वार तक लम्बी चौड़ी सड़क बनाई एवं बड़ी चौपड़ के दोनों और दो चौपड़ों (छोटी) का निर्माण हुआ। चौपड़ों के समानान्तर दाएं व बाएं बाजार एवं उनके गलियां निकाली गई। जो आपस में चौराहों पर सीधी मिलती हैं। जयपुर नगर नियोजन की सबसे उत्कृष्ट बात यह है कि हर गली मुख्य बाजार में आकर एकदम सीधी मिल जाती है। उत्तर पश्चिम में पहाड़ी के नीचे तालकटोरा तालाब बनवाया गया और इसके पास ही जयनिवास महल का निर्माण किया। वृंदावन से लाए गए गोविन्द देवजी भगवान की मूर्ति को इसी जय निवास में स्थापित किया ताकि प्रातः उठते ही भगवान के सीधे दर्शन हो जाए।

पृथक-पृथक व्यवसाय करने वाले लोगों को लाकर उनके व्यवसाय के अनुसार उनके मौहल्लों का नामकरण किया गया। यथा मौहल्ला कमनीगरान, बाजदारान, पन्नीगरान, सिलावटान, बसातियान, जौहरीयान, कसाईयान, तेलियान, ठठेरान इत्यादि। नगर के मुख्य मार्गों के नाम नगर के मुख्य लोगों के नाम पर रखे गए जैसे- रास्ता गोपालजी, विद्याधर जी, संधी जी, कल्याणजी, मिश्राजी, हरीमोहन जी आदि। समस्त नगर को 20 फुट ऊंचे एवं 9 फीट चौड़े कंगूरेदार परकोटे से घेरा गया एवं इसके मध्य में सप्तखंडी चन्द्रमहल बनाया गया। जिसके सात खंड (मंजिल) सुख निवास, रंगमदिर, बादल महल, प्रीतम निवास, शोभा निवास, छवि निवास व मुकुट निवास के नाम से जाने जाते हैं। इसी परिसर में दीवाने आम और खास, जनाना ड्योढी, आतिश, रथखाना, फीलखाना, शुतुरखाना, कपटद्वारा, फर्राश खाना, तौशह खाना जैसे शासकीय भवनों का निर्माण कराया गया। नगर में मुख्य सड़कों के दोनों ओर मकानों की ऊंचाई सड़क की चौड़ाई की आधी रखी गई ताकि इमारतों में हवा, रोशनी अच्छी तरह मिल सके। बड़ी चौपड़ से छोटी चौपड़ तक राजमहल का दक्षिणी भाग दुकानों के ऊपर खाली रखा गया ताकि उसकी छत पर हवामहल से छोटी चौपड़ तक रानियां एवं दासियां आ जा सकें एवं उत्सवों व सवारियों के दृश्य देख सकें। नगर के चारों दिशाओं में पूर्व में सूरजपोल, पश्चिम चांदपोल, उत्तर में ध्रूवपोल, दक्षिण में घाट दरवाजा, नानक सुरक्षा द्वार बनाए गए। सांगानेर तथा अजमेर दरवाजा शहर के मध्य बाजारों के प्रवेश द्वार बनाए गए। त्रिपोलिया दरवाजा, राजमहलों का प्रवेश द्वार बनाया गया। सभी इमारतों को गुबन्दों, मेहराबों, झरोखों, छतरियों, नक्काशीदार स्तम्भों, छोटी-छोटी खिड़कियों से सजाया गया। इसमें आराइशी काम व भित्ति चित्रों की प्रमुखता थी। जयगढ़, नाहरगढ़, आभागढ़, रघुनाथगढ़, हथरोई आदि भी जयसिंह द्वारा बनाए गए थे। इस तरह सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा बसाया गया जयपुर उस समय का संसार का सुन्दरतम शहर था। जिसकी बसावट की आज भी हर कोई सराहना करता है।

'गीता ज्ञान के प्रसारण को आए थे तनसिंह जी'

(पृष्ठ एक का शेष)

आवणिया (भावनगर)

बाड़मेर

संघ शक्ति, जयपुर

पूर्व सरपंच सवाईसिंह भियाड़, देवीसिंह भियाड़, रितु चारण आदि ने भी अपने उद्‌गार प्रकट किए। कार्यक्रम में 21 जनवरी को पूज्य श्री की स्मृति में आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विजेता रहे दिलीपसिंह, गंगासिंह, हितेश जांगिड़ व नरेश जांगिड़ को सम्मानित भी किया गया। समारोह के प्रारम्भ में प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ ने यज्ञ करवाया।

बालोतरा संभाग के कल्याणपुर कस्बे के जगदंबा राजपूत छात्रावास प्रांगण में समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें बालोतरा, समदड़ी, लूणी, सिणधरी, बायतु, सिवाणा क्षेत्र से हजारों समाज बंधु उपस्थित रहे। समारोह को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह महरोली ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने आज से 71 वर्ष पूर्व मानव को इंसान बनाने की प्रणाली प्रस्तुत की और उनको सच्ची श्रद्धांजलि उस प्रणाली को अंगीकार करना ही है। बाड़मेर के संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा ने संघ और पूज्य तनसिंह जी के संबंध में अनेक संस्मरणों द्वारा पूज्य श्री के दर्शन की व्याख्या प्रस्तुत की। प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा ने पूज्य तनसिंह जी का एवं शेरगढ़ प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। समारोह को रावल किशनसिंह जसोल, सिवाणा विधायक हमीरसिंह भायल, कल्याणपुर प्रधान हरीसिंह, नागाणा मंदिर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष उम्मेदसिंह अराबा, वरिष्ठ स्वयंसेवक अमरसिंह अकली, युवा नेता हुकमसिंह अजीत आदि ने भी संबोधित किया। संचालन मदनसिंह सोलंकिया तला ने किया।

केन्द्रीय कार्यालय जयपुर में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी के सानिध्य में कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें प्रतिवर्ष की भांति स्नेहभोज का भी आयोजन किया गया। विक्रमसिंह दौलतपुरा ने 1962 में भारत-चीन युद्ध के समय लोकसभा में दिए गए पूज्य तनसिंह जी के वक्तव्य को पढ़कर सुनाया जिसमें उन्होंने संकट के समय समस्त मतभेद भुलाकर सरकार के साथ खड़े रहने की अपील की थी। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने पूज्य तनसिंह जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार रखते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्‌देश्य, मार्ग एवं इसकी स्थापना के समय देश की परिस्थितियों को स्पष्ट किया और संघ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख रामसिंह अकदड़ा ने किया। संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास के सानिध्य में महाराजा भूपाल छात्रावास चित्तौड़गढ़ में कार्यक्रम रखा गया जिसे संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से पूर्व समाज में इस बात की जागृति का शंख फूंका कि हमारा इतिहास हमारी अमूल्य धरोहर है, उसे संभालने के साथ-साथ उसमें अनवरत रूप से वृद्धि भी होती रहनी चाहिए और संघ यही प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज हमारे इतिहास को विकृत करने का प्रयास हो रहा है और जिस प्रकार समाज इससे पीड़ित हो रहा है, पूज्य श्री ने इस बात को आज से 71 वर्ष पहले समझा और इतिहास लिखाने का मार्ग बता गए। देवेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व प्रधान गोविन्दसिंह, गंगासिंह साजियाली आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

जालोर संभाग के बेदाना गांव में आशापुरा माता मंदिर में जयंती का कार्यक्रम हुआ जिसमें समाज बंधुओं को बताया गया कि तनसिंह जी का अवतरण हमारी कौम को इतिहास लिखाने की क्षमता अर्जित करवाने के लिए हुआ था। वे एक ऐसी अद्‌भुत माता की संतान थे जिन्होंने मां के ममत्व और पिता की कठोरता का सामंजस्य कर अपनी संतान की परवरिश की। संघ आज के समाज की नहीं बल्कि सैंकड़ों वर्षों के बाद के समाज की बात करता जब आज संघ में आने वाले बालक अपनी संतान को उनके माता-पिता से मिले क्षत्रियत्व की अपेक्षा कुछ अधिक क्षत्रियत्व देकर जाएंगे और उत्तरोत्तर हमारी आने वाली पीढ़ियों के क्षत्रियत्व में निखार आता जाएगा। कार्यक्रम को हनुवंतसिंह मोरुआ, गणपतसिंह भंवराणी, खुशबू कंवर तड़वा, हिमानी कंवर मालपुरा ने भी संबोधित किया। जालोर संभाग की ही पाली शहर शाखा का कार्यक्रम राजेन्द्र नगर स्थित सभा भवन में रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह ने गीता में वर्णित क्षत्रिय की परिभाषा के सातों गुणों को स्पष्ट करते हुए तनसिंह जी को उन गुणों का पुनर्स्थापक बताया। रश्मि कंवर देलदरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जयपुर संभाग के दौसा प्रांत के बाढ़ मोचींगपुरा गांव में हुए कार्यक्रम में राजेन्द्रसिंह बोबासर ने पूज्य श्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया वहीं प्रांत प्रमुख मदनसिंह बामाण्या ने संघ की कार्य प्रणाली को विस्तार से समझाया। गोड़वाड़ प्रांत की छोटी रानी शाखा में प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोड़ता ने पूज्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। उदयपुर स्थित बी.एन.पी.जी. कॉलेज परिसर में संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने साथी स्वयंसेवकों को साथ जयंती मनाई। नागौर संभाग के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। वहीं बीकानेर शहर का कार्यक्रम संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन बीकानेर में रखा गया। जोधपुर शहर के स्वयंसेवकों ने संभागीय कार्यालय तनायन में जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया। नागौर की अमर राजपूत छात्रावास शाखा में जयंती मनाई गई वहीं अजमेर की महिला शाखा की स्वयंसेविकाओं ने पूज्य श्री को पुष्पांजलि अर्पित की। पोकरण की भैंसड़ा व सांकड़ा शाखा में भी जयंती मनाई गई। गुजरात के गोहिलवाड़ प्रांत की आवणिया शाखा में जयंती के दिन कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रांत के सभी स्वयंसेवक शामिल हुए। प्रांत की शेष शाखाओं में अलग-अलग दिन जयंती के उपलक्ष में कार्यक्रम रखे गए। बाड़मेर के गुड़ामालाणी प्रांत की हाथीतला शाखा में केन्द्रीय कार्यकारी रामसिंह माडपुरा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। इसी प्रांत में गुड़ामालानी की संस्कार धाम शाखा में व बूल गांव शाखा में भी जयंती का कार्यक्रम रखा गया। अजमेर के केकड़ी में पूज्य श्री की जयंती केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली के सानिध्य में मनाई गई। बाड़मेर के मल्लीनाथ छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली ने बताया कि सृष्टि में निरन्तर संघर्ष चलता रहा है और जो उद्‌देश्य प्राप्ति के लिए सतत् साधना करता है वही विजयश्री का वरण करता है। संघ उसी सात्विक साधना का पर्याय है। कार्यक्रम में गोपालसिंह सुवाला, छगनसिंह लुणु आदि ने भी अपने उद्‌गार प्रकट किए। इस कार्यक्रम में छात्रावास के विद्यार्थियों के अलावा शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व सहयोगी शामिल हुए। जैसलमेर के संभागीय कार्यालय तनाश्रम सहित विभिन्न शाखाओं में जंयती मनाई गई। रामगढ़ के निकट राधवा शाखा के कार्यक्रम में आस-पास के गांवों से भी सहयोगी शामिल हुए। प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ ने पूज्यश्री व संघ विषय पर अपनी बात कही। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न कोनों में निवासरत स्वयंसेवकों ने अपने सहयोगियों एवं समाज बंधुओं सहित पूज्यश्री की स्मृति में कार्यक्रम रख उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

केकड़ी

कल्याणपुर

चित्तौड़

संपादकीय

क्या हों जीवन और मरण के प्रश्न?

जीवन में कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिन पर जीवन की सार्थकता टिकी होती है। वे ऐसे प्रश्न होते हैं जो जीवन के अस्तित्व के कारण होते हैं और उन प्रश्नों के लिए जीवन और मरण दोनों सार्थक होते हैं। ये प्रश्न सनातन प्रश्न होते हैं, इनका किसी काल, देश या परिस्थिति से कोई संबंध नहीं होता बल्कि इनका हर काल, हर देश एवं हर परिस्थिति में समान महत्त्व होता है और उनके इसी महत्त्व के कारण वे जीवन मरण के प्रश्न कहे जाते हैं। हमारा समाज प्रारम्भ से ऐसे प्रश्नों का पारखी रहा इसलिए उसके लिए ऐसे प्रश्नों के लिए जीवन और मरण दोनों की ही कीमत नहीं रही। उसके लिए सदैव ये प्रश्न महत्त्वपूर्ण रहे और इसीलिए समाज का इतना समृद्ध इतिहास है। मध्यकाल में हमारे समाज के समक्ष संघर्ष की विकट परिस्थितियां उपस्थित हुईं। ऐसे बहुमुखी संघर्ष की परिस्थितियां पैदा हुईं कि हमें सदैव जान हथेली पर लेकर जीना पड़ता था इसलिए हमारा पूरा मध्यकाल ऐसी परिस्थितियों के बीच त्याग और बलिदान के अचिन्त्य उदाहरणों से भरा पड़ा है। जीवन मरण के शाश्वत प्रश्नों (मूल्यों) के लिए जीवन का बलिदान करना हमारे मध्यकालीन पूर्वजों के लिए अति सामान्य बात थी और वह उस काल की आवश्यकता थी। हमारे उन मूल्यों पर आघात करने वाले बर्बर आततायी केवल तलवार की भाषा ही समझते थे और ऐसे में तलवार आदि अस्त्र-शस्त्र उस युग के काल सापेक्ष हथियार थे और सदैव मरने को तैयार रहना उस काल की काल सापेक्ष आवश्यकता थी। लेकिन मध्यकाल के उत्तरार्द्ध में दुर्गाबाबा का आदर्श चरित्र हमें संकेत करता है कि उन शाश्वत प्रश्नों (मूल्यों) के लिए मरने से अधिक जीना आवश्यक है और इसीलिए उन्होंने तिल-तिल कर मरने का मार्ग चुना और सबसे क्रूर व शक्तिशाली शासक के विरुद्ध लंबा संघर्ष चला कर उसे झुकने को मजबूर कर दिया। ऐसे में दुर्गा बाबा के रूप में हमारे लिए यह ईश्वरीय संकेत था कि वर्तमान समय में उन मूल्यों के लिए मरने की नहीं बल्कि मजबूती से जीने की आवश्यकता है। आज के समय में जमाने का हथियार विचार है, अपनी बात को उपलब्ध व्यवस्था के तरीकों का उपयोग कर जनमानस को उसके अनुरूप खड़ा करने का है और जो ऐसा कर लेता है वही विजय श्री का वरण करता है। आज का युग व्यक्तिगत लड़ाई का नहीं बल्कि शाश्वत मूल्यों के लिए जनमानस को अपने साथ खड़ा करने का है और वह सब अपने विचार को उचित तरीके से जनमानस में प्रसारित करने से ही संभव है। मरने और मारने की बात बर्बर जातीय संघर्ष की कहानी है और ऐसे संघर्ष से संसार गुजर चुका है। यदि विश्व के समकालीन इतिहास को देखें तो ऐसे बर्बर संघर्ष में संसार को झोंकने के प्रयास निरंतर असफल होते जा रहे हैं और विचार के प्रसार के तरीके निरन्तर सफल होते जा रहे हैं। यही जमाने का अनुकूल हथियार है। लेकिन हमारे भाव प्रधान समाज की यह स्थिति है कि हम अभी भी मरने मारने की मध्यकालीन मानसिकता को सहज ही ग्रहण करने को उतारू रहते हैं और ऐसे प्रश्नों को जीवन मरण का प्रश्न बना लेते हैं जो वास्तव में जीवन मरण के प्रश्न नहीं होते बल्कि कुछ लोगों द्वारा अपनी नासमझी के कारण बना दिए जाते हैं। ऐसे में हमारा मरने मारने की मध्यकालीन मानसिकता के प्रति आकर्षण हमें उन प्रश्नों के मूल में जाने से रोकता है और हम प्रश्नों के मूल को समझे बिना ही सड़कों पर उतरने को उतारू हो जाते हैं। विगत कुछ समय से जिन प्रश्नों पर समाज आंदोलित हुआ है, समाज का युवा अपने भविष्य को दांव पर लगाकर जिस प्रकार उद्वेलित हुआ है, जरा ठहर कर, शांत चित्त से विचार करें कि क्या वे सभी प्रश्न उन शाश्वत प्रश्नों से संबद्ध थे जिनको जीवन मरण का प्रश्न माना जाता है? क्या वे प्रश्न ऐसे प्रश्न थे जो हमारे जीवन के अस्तित्व पर चोट कर रहे थे या हमारे जीवन की सार्थकता पर प्रश्न खड़े कर रहे थे? हम जिस विचार के युग में जी रहे हैं उस युग में हमारा मुकाबला जिन कुटिल षड्यंत्रकारियों से है वे बड़े ही शांत चित्त से अपनी चालें चलते हैं और हम भावना में बहकर विचार के प्रवाह को अवरुद्ध कर अपने अहंकार को स्वाभिमान का स्वरूप दे जमाने के प्रतिकूल हथियारों के सहारे मैदान में आ जाते हैं और मुंह की खाते हैं। जो लोग हमारा इस प्रकार आह्वान करते हैं वे स्वयं भी जमाने के अनुकूल समझ से खाली होते हैं और हमें उनकी इस प्रवृत्ति का शिकार होना पड़ता है। भावना के आवेश में अपनी समझ को एक तरफ रख हमारी क्रिया प्रतिक्रिया इतनी उग्र और तेज होती है कि कोई भी समझदार व्यक्ति हमारी इस प्रवृत्ति का विरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता और यदि कोई ऐसा करने का प्रयास करता है तो हम उसे तुरन्त समाज द्रोही का प्रमाण-पत्र दे देते हैं। लेकिन यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती बल्कि इस पूरे घटनाक्रम में हमारे अनेक भावुक युवाओं के भविष्य का जीवन अनेक मुकदमों में उलझ कर रह जाता है और उनका जीवन जो जीवन मरण के वास्तविक प्रश्नों (मूल्यों) में उपयोग होना चाहिए था वह मिथ्या प्रश्नों में उलझ कर अवरुद्ध हो जाता है। ऐसे में हमें यह तय करना पड़ेगा कि कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो क्षत्रिय की परिभाषा को चरितार्थ करने में सहायक हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो अहंकार से नहीं स्वाभिमान से संबंधित हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो स्वार्थ से नहीं त्याग से संबंधित हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो हमारी बर्बरता नहीं बल्कि शौर्य प्रकट करते हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो हमें व्यवस्था के भंजक नहीं बल्कि पालक सिद्ध करते हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो ईश्वरीय सृष्टि के सफल संचालन में बाधक नहीं बल्कि साधक हैं? कौनसे ऐसे प्रश्न हैं जो हमारे कुल, परम्परा एवं संस्कृति को अवरुद्ध करने वाले नहीं बल्कि संवाहक हैं? यदि इन बातों पर विचार किए बिना केवल भावना के वशीभूत होकर हम सदैव मरने मारने को उतारू रहेंगे तो निश्चित रूप से हमारा व जाति का जीवन अवरुद्ध होगा और हमारे व जाति के जीवन का अवरुद्ध होना ईश्वर के उस विधान के विपरीत है जिसके तहत हमें श्रेष्ठ कुल एवं परम्परा में जन्म मिला है। इसलिए आएं अपनी समझ को इतना विकसित करें कि हम चंद नासमझ लोगों की नासमझी का शिकार बने बिना दुर्गा बाबा की तरह शाश्वत मूल्यों के लिए तिल तिल कर मरने हेतु जीवित रहने के मार्ग पर आरूढ़ होवें। पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताया गया वही मार्ग हम सबके स्वागत को आतुर है।

लोकेन्द्रसिंह का सादगीपूर्ण विवाह

संघ के स्वयंसेवक लोकेन्द्रसिंह ऊंचायड़ा का विवाह 22 जनवरी को हुआ जिसमें एक रु पाया, नारियल एवं वधु के दो जोड़ी कपड़े ही वर पक्ष द्वारा स्वीकार किए गए। परिवार की सहमति के बावजूद समाज के अन्य लोगों के विरोध एवं आलोचना के बीच लोकेन्द्रसिंह व उनका परिवार अडिग रहे और शादी में होने वाले अपव्यय के विरुद्ध एक सशक्त उदाहरण पेश किया।

दुर्गेश कंवर को गार्गी पुरस्कार

संघ के बाड़मेर शहर के प्रांत प्रमुख महिपालसिंह चूली की पुत्री दुर्गेश कंवर को दसवीं बोर्ड में 85.50 प्रतिशत अंक हासिल करने के कारण बसंत पंचमी को बालिका शिक्षा फाउंडेशन द्वारा गार्गी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दुर्गेश वर्तमान में मयुर नोबल्स स्कूल में कक्षा 11वीं (विज्ञान वर्ग) में अध्ययनरत है।

शाखा में मनाया स्वयंसेविका का स्मृति समारोह

जालोर प्रांत की मोरुआ बालिका शाखा में 21 जनवरी को दिवंगत स्वयंसेविका पुष्पेन्द्र कंवर मोरुआ का प्रथम स्मृति दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को शाखा प्रमुख खुशबू कंवर तड़वा, हिमानी कंवर मालपुरा, सुमन कंवर बेदाना, दुर्गेश कंवर मोरुआ, विजयलक्ष्मी कंवर मालपुरा, अर्जुनसिंह मालपुरा, पृथ्वीसिंह भंवराणी, अचलसिंह बेदाना, सुमेरसिंह मोरुआ, गोपालसिंह मोरुआ आदि ने संबोधित किया। संचालन वीर बहादुरसिंह असाड़ा ने किया।

सोनल कंवर राणावत गणतंत्र दिवस परेड में शामिल

सिरोही जिले के काछोली गांव निवासी जसवंतसिंह राणावत की पुत्री सोनल कंवर एन.सी.सी. कैडेट के रूप में गणतंत्र दिवस परेड में शामिल हुई। सोनल बी.एन.पी.जी. कॉलेज उदयपुर में बी.एस.सी. तृतीय वर्ष की छात्रा है।

बाड़मेर में मोटिवेशनल सेमिनार

संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ की बाड़मेर इकाई के तत्वावधान में 14 जनवरी को श्री मल्लीनाथ छात्रावास (महाविद्यालय) में एक मोटिवेशनल सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें मोटिवेशनल गुरु बी.के. शर्मा (अलवर) ने जीवन में लक्ष्य हासिल करने के लिए सकारात्मक विचारों को आवश्यक बताया। उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के गुर बताते हुए स्वास्थ्य संबंधी जानकारी भी दी। कार्यक्रम में 150 संभागी शामिल हुए। लालसिंह रामदेरिया, प्रेमसिंह लाबराऊ, गणपतसिंह हुरों का तला आदि ने इस कार्यक्रम की व्यवस्था संभाली।

फेफाना में स्नेहमिलन

हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के फेफाना गांव में 14 जनवरी को संघ का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें भानुप्रतापसिंह खुईयां ने संघ की कार्य प्रणाली एवं विचार दर्शन की जानकारी दी। स्नेहमिलन में उपस्थित महेशसिंह, अंकितसिंह, जीवराजसिंह भूकरका, सुरेन्द्रसिंह भाटी आदि ने सभी से चर्चा कर आगामी छुट्टियों में क्षेत्र में संघ का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करवाने का प्रस्ताव भेजने का निर्णय लिया।

'समझें और समझाएं : सामराऊ के संकेत'

14 जनवरी को दो शराब व्यवसायियों के बीच हुए संघर्ष में हनुमान राम साई नाम के शराब व्यवसायी की हत्या हो गई। हत्या करने वाले लोगों में चार राजपूत एवं दो जाट शराब व्यवसायी थे। इस संघर्ष में एक राजपूत शराब व्यवसायी को हनुमानराम द्वारा गोली मारी गई और फिर हुए संघर्ष में हनुमानराम मारा गया। इस प्रकार यह घटना विशुद्ध रूप से दो शराब व्यवसायी गैंगों का संघर्ष था जिसमें मरने वाला जाट था और मारने वालों में भी जाट शामिल थे लेकिन तथाकथित जाट नेताओं ने इस हत्या को जातीय स्वरूप दिया और 15 जनवरी को ओसियां विधायक एवं विधानसभा में सचेतक भैराराम सियोल, कांग्रेस नेता दिव्या मदेरणा एवं निर्दलीय विधायक हनुमान बेनीवाल आदि जाट नेताओं द्वारा आयोजित सभा में घटनास्थल सामराऊ गांव के निर्दोष राजपूतों के घर व दुकानें चुन-चुन कर जलाए गए जबकि मरने वाले एवं मारने वाले पक्ष में कोई भी उस गांव का निवासी नहीं था। घटना उस गांव में हुई थी इसीलिए शव को वहां रखकर प्रदर्शन किया जा रहा था। सैंकड़ों वर्ष पुराना रावला कोट पेट्रोल आदि ज्वलनशील पदार्थ डालकर जला दिया गया। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान पुलिस प्रशासन वहां उपस्थित होते हुए मूकदर्शक बना रहा एवं दंगाईयों को रोकने के लिए उपयुक्त कार्रवाई नहीं की। वर्षों की मेहनत से तैयार किए गए लोगों के घर व सम्पत्ति जला दी गई। निकट स्थित गांव भेड़ व चामूं में भी तोड़फोड़ व आगजनी की गई। घटना की सूचना मिलने पर 15 जनवरी की रात को ही ओसियां के राजपूत सभा भवन में समाज बंधु एकत्र हुए। घटना की तीव्र निंदा करते हुए सरकार को उचित कार्रवाई करने हेतु 21 जनवरी तक का समय दिया। उधर 17 जनवरी को शेरगढ़ विधायक बाबूसिंह राठौड़ लगभग 1500 समाज बंधुओं सहित सामराऊ पहुंचे। वहीं ओसियां के समाज बंधुओं के साथ राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर, बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर, भाजपा देहात के जिलाध्यक्ष भोपालसिंह बड़ला, कांग्रेस के महेन्द्रसिंह उम्मेदनगर, करणसिंह उचियारड़ा, मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा, श्री क्षत्रिय युवक संघ के जोधपुर शहर प्रांत प्रमुख उम्मेदसिंह सेतरावा, शेरगढ़ व ओसियां क्षेत्र के स्वयंसेवकों सामराऊ पहुंचे। वहां सभी की सहमति से एक पांच सूत्रीय मांगपत्र सरकार को सौंपा गया जिसमें दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई, उचित क्षतिपूर्ति राशि, भड़काने वाले राजनेताओं के विरुद्ध कार्रवाई, दोषी पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई एवं जाटों के दबाव में हटाए गए पुलिस अधिकारियों की पुनः बहाली को शामिल किया गया एवं 20 जनवरी तक मांगे मानने का समय दिया गया अन्यथा 21 जनवरी को उग्र प्रदर्शन की चेतावनी दी गई। सरकार के प्रतिनिधि के रूप में मौजूद वनमंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर ने विधायक बाबूसिंह के साथ मुख्यमंत्री से मिलकर घटना का विवरण बताया एवं मांग पत्र पेश किया। 19 जनवरी को गृहमंत्री के नेतृत्व में उच्च स्तरीय सरकारी दल ने घटना स्थल का दौरा किया एवं 20 जनवरी को सभी पांचों मांगों पर सहमति जताते हुए सरकार ने 25 से अधिक मुकदमे दर्ज किए व 5 करोड़ का राहत पैकेज पैकेज घोषित किया गया, दोषी अधिकारियों को हटाया गया, दोषी राजनेताओं के खिलाफ जांच के बाद कार्रवाई का आश्वासन दिया एवं जाट समाज के दबाव में हटाए गए पुलिस अधिकारियों को बहाल किया गया। इस पर समाज के प्रतिनिधियों द्वारा 21 जनवरी का प्रदर्शन 1 फरवरी तक के लिए स्थगित किया गया। 23 जनवरी को क्षतिपूर्ति राशि के चैक सौंप दिए गए। इस प्रकार संयम, समझदारी एवं व्यवस्था को बनाए रखने की भावना के फलस्वरूप समाज ने सरकार के साथ सहयोग करते हुए मामले को शांतिपूर्वक निपटाने में पूर्ण सहयोग किया।

लेकिन क्या यह मामला यही समाप्त हो जाता है या इस घटना के पीछे छिपे संकेतों को समझना आवश्यक है? इस घटना ने अनेक संकेत समाज और राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किए हैं जिन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमें समझना एवं समझाना आवश्यक है। इस घटना का पहला संकेत तो यही है कि लोकतंत्र में लोकतांत्रिक व्यवस्था का गलत तरीके से फायदा उठाकर समाज विशेष के लोग राजनीति एवं प्रशासन में मजबूत बनते गए और अब अपने आप को व्यवस्था का मालिक समझकर अन्याय पर उतारू हैं और उनकी राजनीतिक ताकत के बल पर प्रशासन ऐसी परिस्थितियों में पंगु हो मूकदर्शक बन जाता है। ऐसे में हमें समझने के साथ अन्य समाजों को भी यह बात समझानी आवश्यक है कि अपनी राजनीतिक ताकत के गरुर में पागल हुए लोग जब राजपूत समाज जैसी मजबूत कौम पर इस प्रकार कायराना तरीके से हमला कर सकते हैं तो अन्य कौमों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे? नागौर जिले के डांगावास में घटी घटना इस बात को स्पष्ट भी करती है। ऐसे में सभी को मिलकर इस प्रकार के राक्षसी कृत्य करने वाले समूह की राजनीतिक ताकत को कम करने की योजना बनानी चाहिए। दूसरा बड़ा संकेत यह है कि वर्तमान आरक्षण व्यवस्था की विकृतियों का लाभ लेकर सम्पूर्ण अन्य पिछड़ा वर्ग का कोटा एक ही जाति द्वारा हथियाने का परिणाम है कि उक्त घटना के दौरान तैनात पुलिस फोर्स में तैनात चार थानाधिकारी उसी जाति विशेष के थे जिसका नाम उपद्रव करने में प्रचारित हुआ है। अधिकांश सिपाही इसी समूह से थे। ऐसे में वे सभी घटना को रोकने की अपेक्षा तमाशबीन बने हुए थे। यदि वहां उपस्थित प्रशासन में इस प्रकार एक ही जाति विशेष का बाहुल्य नहीं होता तो क्या घटना का स्वरूप इतना विद्रुप होता। ऐसे में अन्य समाजों को समझाया जाना आवश्यक है कि राजपूत समाज बार-बार आरक्षण के समयबद्ध रिव्यु की जो मांग कर रहा है वह सम्पूर्ण समाज की शांति एवं व्यवस्था के लिए आवश्यक है और साथ ही यह भी समझने एवं समझाने का विषय है कि प्रशासनिक अमले में भी राजनीतिक ताकत ही प्रभावी होती है इसलिए पहली आवश्यकता राजनीतिक प्रभुत्व पर चोट करना है। ओसियां में समाज के प्रतिनिधियों के बीच एक अधिकारी का यह निवेदन कि फोर्स के लोग अपराधियों को पहचानने में सहयोग नहीं कर रहे इसलिए समाज सहयोग करे, अपने आप में बहुत कुछ कहता है, क्या हम इस संकेत को समझ कर सम्पूर्ण समाज को समझा पाएंगे? अगला संकेत समझने और समझाने का यह है कि बाड़मेर की जनता ने जोधपुर की जाति विशेष के लिए सांसद चुना था या बाड़मेर की 36 कौम का। ऐसा ही सीकर, नागौर की जनता भी पूछ सकती है और जोधपुर के एक नेताजी को राज्यसभा में भेजने वाले राजनीतिक दल के कार्यकर्ता भी अपने आकाओं से पूछ सकते हैं। सामराऊ में घटना घटी तो हमारे समाज के उस क्षेत्र के जनप्रतिनिधि ही सक्रिय हुए, राजस्थान भर के जनप्रतिनिधि एकत्र नहीं हुए क्योंकि वे यह समझते हैं कि व्यक्तिगत प्रतिबद्धता किसी एक जाति विशेष के प्रति होने के बावजूद एक जनप्रतिनिधि के रूप में वे अपने क्षेत्र के समस्त जाति समाजों के जनप्रतिनिधि हैं और वे उस गरिमा का ध्यान रखते हैं लेकिन घटना के बाद एक जाति विशेष के सभी क्षेत्रों के जनप्रतिनिधियों का अपराधियों के पक्ष में जमावाड़ा यह सिद्ध करता है कि ये हमारे प्रदेश को किस ओर ले जाना चाहते हैं?

अगला संकेत यह है हमारे समाज के राजनेताओं को हम सब सबसे आसान लक्ष्य मानकर सदैव दोष देते हैं लेकिन उनकी अपनी सीमाएं होती हैं और सीमाओं में रहकर वे भी हमारी ही तरह समाज की पीड़ा से पीड़ित होते हैं। इस घटना पर हमारे समाज के इस क्षेत्र के राजनेताओं ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई एवं दुष्टों को सजा दिलवाने की कार्रवाई के साथ-साथ पीड़ितों को सरकार से अधिकतम क्षतिपूर्ति दिलवाने का सराहनीय प्रयास किया। इसलिए राजनेताओं को गालियां देने की अपेक्षा यह समझना चाहिए कि वे भी हमारे ही समाज के हमारे जैसे ही अंग है। अगला संकेत यह है कि राजनीतिक पार्टियों की प्रतिक्रिया को देखे तो आश्चर्यजनक रूप से दोनों ही मुख्य पार्टियों के राजपूतों के अलावा अन्य पदाधिकारियों की चुप्पी खलने वाली रही। भाजपा को तो हम दोष देते ही हैं लेकिन आनन्दपाल जैसे नकारात्मक मुद्दे पर हमारे समाज से समर्थन की आस लगा बैठी कांग्रेस के भी किसी वरिष्ठ पदाधिकारी का इस अन्यायपूर्ण घटना के विरोध के मुंह नहीं खुला जो यह सिद्ध करता है कि दोनों ही पार्टियां हमारे साथ कितना उपेक्षापूर्ण व्यवहार करती हैं ऐसे में हमारे समाज के इन नेताओं से जुड़े लोग क्या अपने नेताओं से यह प्रश्न पूछेंगे कि ऐसे संवेदनशील मुद्दे पर भी उनकी चुप्पी क्या अपराध को संरक्षण देने जैसी नहीं है। इस मुद्दे में हमारे समाज की संयमित एवं समझदारी भरी प्रतिक्रिया पूरे प्रदेश के लिए सराहनीय व अनुकरणीय रही। समाज के प्रत्येक घटक ने अपने आपको पीड़ित महसूस किया एवं हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया ऐसी थी कि जैसे उसका स्वयं का घर जला हो। यह हमारे समाज की जीवित संवेदना का प्रतीक है और हमारे इस भाव को पुष्ट करता है कि हम सभी एक ही मां की संतान हैं। लेकिन प्रदेश के हर जाति वर्ग को यह समझाने की आवश्यकता है कि कहीं उसके द्वारा डाला गया एक भी वोट इस प्रकार की दुष्ट प्रवृत्ति को तो मजबूत नहीं कर रहा है। साथ ही एक विशेष बात जो समझनी और समझानी आवश्यक है वह यह है कि शराब आदि व्यवसायों में लगे लोगों को समाज का नायक बनाना कितना घातक है? ये लोग सामाजिक कार्यों में भरपूर पैसे खर्च करते हैं और परिणाम स्वरूप समाज को आवश्यकता पड़ने पर इनके साथ खड़ा होना पड़ता है और इसी की परिणाति में दो अपराधियों के झगड़े को जातीय स्वरूप दे दिया जाता है। इसलिए हमें यह भी समझना पड़ेगा कि कहीं हम पवित्र सामाजिक कार्यों में इस प्रकार के आपराधिक कृत्यों से कमाया पैसा तो नहीं खर्च कर रहे हैं अन्यथा हमें भी कभी न कभी उन अपराधियों के साथ खड़ा होना पड़ सकता है और ऐसे में हम उन सबकी आलोचना करने के अधिकारी नहीं रहेंगे जो अपनी सामाजिक शक्ति के बल पर अपराध जगत के लोगों को संरक्षण देते हैं।

संघ ने की सहयोग की पहल

घटना के दूसरे दिन ही संघ प्रमुख श्री के निर्देश पर श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्ध संस्था श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान के बैंक खाते में समाज से सहयोग मांगने का निर्णय हुआ। समाज को इस बाबत् संदेश प्रसारित किया गया एवं समाज ने सहयोग करना प्रारम्भ किया। छोटी-छोटी राशि के रूप में सहयोग मिलना प्रारम्भ हुआ। इसी बीच सरकार द्वारा क्षति-पूर्ति पैकेज घोषित करने के कारण इस मुहिम को स्थगित कर दिया गया लेकिन समाज के सदस्यों द्वारा यथाशक्ति सहयोग करने की भावना ने हमारे सामाजिक भाव को पुष्ट किया। संघ की पहल का अनुसरण करते हुए अनेक अन्य सामाजिक संस्थाओं ने भी यह कार्य प्रारम्भ किया।

जयंती समारोह किया निरस्त

इस वर्ष शेरगढ़ प्रांत के सेखाला में जयंती समारोह प्रस्तावित था। सभी स्वयंसेवक गांव-गांव घूमकर संदेश प्रसारित कर चुके थे। 21 जनवरी को हर मंडल में वाहन रैली प्रस्तावित थी लेकिन इस घटना के बाद संघ प्रमुख श्री ने सभी स्वयंसेवकों को इस वर्ष सेखाला का कार्यक्रम निरस्त करने का निर्देश देते हुए इस घटना से पीड़ित समाज बंधुओं के सहयोग एवं अन्याय के प्रतिकार में अपनी पूरी ऊर्जा लगाने को कहा। इसके परिणाम स्वरूप जयंती की सम्पूर्ण तैयारियों को निरस्त कर दिया गया एवं क्षेत्र के सभी स्वयंसेवक निर्देशित कार्य में संलग्न हुए।

समाज करेगा अपनी बेटी का विवाह

सामराऊ निवासी सोहनसिंह की पुत्री का विवाह 17 फरवरी को प्रस्तावित था। लेकिन घटना में उनका पूरा घर जला दिया गया एवं शादी के लिए बनवाए गए आभूषण भी लूट ले गए। समाज के वरिष्ठजनों ने निर्णय लिया कि सोहनसिंह जी की पुत्री हमारे समाज की पुत्री है एवं समाज अपनी बेटी का विवाह जोधपुर स्थित मारवाड़ राजपूत सभा भवन में करेगा। इसके लिए व्यवस्था का जिम्मा श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान को सौंपा गया है। समाज के लोगों के इस बाबत सकारात्मक संदेश आ रहे हैं और इस विवाह को सामाजिक भाव का उत्कृष्ट उदाहरण बनाने की तैयारी जारी है।

'फल ईश्वर पर छोड़ें, परिणाम श्रेष्ठ होंगे'

अपने भीतर विराजमान ईश्वरीय शक्ति का अहसास करते हुए पूर्ण मनोयोग से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने एवं फल ईश्वर पर छोड़ने से परिणाम हमेशा श्रेष्ठ ही होते हैं। बाड़मेर में संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ द्वारा विगत तीन माह से संचालित रीट व कांस्टेबल परीक्षा की तैयारी हेतु साप्ताहिक टेस्ट श्रृंखला के समापन एवं श्रेष्ठ संभागीयों को प्रोत्साहन के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 28 जनवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि व्यक्ति यदि अपने कर्मों के फल ईश्वर के चरणों में समर्पित करते हुए निस्वार्थ भाव से समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे तो राष्ट्र निश्चित रूप से अद्वितीय प्रगति करेगा। शिक्षाविद् कमलसिंह चूली ने समय का सदुपयोग करते हुए असफलता से निराश हुए बिना हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की सीख दी। प्रेमसिंह लुणु ने परीक्षा की तैयारी की पूर्ण रुपरेखा बताई। संचालन कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव ने किया। उल्लेखनीय है कि विगत 12 सप्ताह से कर्मचारी प्रकोष्ठ की बाड़मेर इकाई रीट प्रथम व द्वितीय लेवल तथा कांस्टेबल की साप्ताहिक टेस्ट सीरीज का आयोजन कर रही है। आज इन 12 टेस्ट में श्रेष्ठ रहे परीक्षार्थियों को संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में प्रोत्साहन दिया गया।

छत्रपति आलाजी की जयंती मनाई

जैसलमेर के बीदा गांव में 27 जनवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा छत्रपति आलाजी जयंती मनाई गई। ख्याला मठ के मठाधीश गोरखनाथ जी के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में आशीर्वचन स्वरूप नाथजी ने कहा कि आलाजी सच्चे क्षत्रिय थे। उन्होंने गुरु वीरनाथजी के आशीर्वाद से जैसलमेर की आन-बान और शान के लिए आमीर अली पठान से युद्ध किया और सिर कटने के बाद भी संघर्ष करते रहे। ऐसे महापुरुषों को याद किया जाना चाहिए। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा ने कहा कि संघ आलाजी जैसे ही क्षत्रियों को तैयार करने का मार्ग है। पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी ने कहा कि क्षत्रिय सदैव निर्बल और असहाय की सहायता करता है। तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली ने स्वागत उद्बोधन में बताया कि 2013 में माननीय संघ प्रमुख श्री की प्रेरणा से आलाजी जयंती मनाई जानी प्रारम्भ हुई जो प्रतिवर्ष अलग-अलग स्थानों पर मनाई जा रही है। रेमतसिंह झिंझनियाली द्वारा लिखित आलाजी परिचय का पठन किया गया। देरावरसिंह सलखा, अभयसिंह सोनू, वीरमासिंह पूनमनगर, शैतानसिंह पूनमनगर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन सांवलसिंह मोढा व हरिसिंह बेरसियाला ने किया। इस बार आयोजन के लाभार्थी लखसिंह व दौलतसिंह बीदा थे।

गुड़ामालानी में प्रांतीय बैठक

संघ के गुड़ामालानी प्रांत की इस सत्र की प्रथम प्रांतीय बैठक 14 जनवरी को संस्कार धाम विद्यापीठ छात्रावास गुड़ामालानी में केन्द्रीय कार्यकारी प्रकाशसिंह भुरटिया एवं संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा की उपस्थिति में संपन्न हुई। प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ ने विगत सत्र की समीक्षा प्रस्तुत की एवं आगामी सत्र की प्रथम छःमाही की कार्य योजना प्रस्तुत की। अब तक लगी शाखाओं की निरंतरता एवं नियमितता को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। शाखाओं के अलावा जयंतियों आदि कार्यक्रमों की भी रुपरेखा बनाई गई।

पूर्व महाराजा को मिला पदम सम्मान

सिरोही के पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह देवड़ा को इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर घोषित पदम सम्मानों में पदमश्री से नवाजा गया है। यह पुरस्कार इन्हें शिक्षा एवं साहित्य में योगदान के लिए दिया गया है। पूर्व महाराजा ख्याति प्राप्त इतिहासकार हैं। सिरोही आगमन पर उनके शुभचिंतकों द्वारा उनका बहुमान किया गया। सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड के चेयरमैन सत्यनारायण सिंह राठौड़ को भी पदमश्री से नवाजा गया है। उन्हें सिविल सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह पुरस्कार मिला है। उत्तराखंड के विक्रमचन्द्र ठाकुर को विज्ञान के क्षेत्र में पदमश्री पुरस्कार मिला है।

प्रतापसिंह का नौंवा स्थान

भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा आयोजित फार्मासिस्ट भर्ती परीक्षा में बेण्यांकाबास (जयपुर) के परीक्षार्थी प्रतापसिंह ने अखिल भारतीय स्तर पर 9वीं रैंक हासिल की है। प्रतापसिंह के पिता गोपालसिंह भालेरी (चुरू) में थानाधिकारी के पद पर पदस्थापित हैं।

गणतंत्र दिवस
व शिवरात्रि पर
पथप्रेरक के पाठकों को
हार्दिक शुभकमनाएं

ADHIRAJ SINGH
DEVENDRA RAGHAVA
Advocate
Supreme Court of India
Associated with Aura and co.
205, Jagdish Enclave, Opp. Ram Mandir
D-291, Defence Colony, New Delhi
Hawa Sadak, Civil Line, JAIPUR
Mobile : 09166882037, 09460191101

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

(पृष्ठ एक का शेष)

जीवाणा, जालोर

चौहटन, बाड़मेर

चांदना, जालोर

सप्ताह के...

26 जनवरी को भीनमाल के निकट कावतरा शाखा में कार्यक्रम रखा गया वहीं 27 जनवरी को सांचौर प्रांत के कारोला में कार्यक्रम हुआ। 28 को पाली प्रांत की बर शाखा में जयंती मनाई गई वहीं जालोर शहर में स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों ने परिवार सहित यज्ञ कर जयंती सप्ताह की पूर्णाहूति दी। उदयपुर संभाग में भी 21 जनवरी को स्वयंसेवकों के त्रैमासिक स्नेहमिलन के साथ जयंती सप्ताह का आगाज हुआ। उदयपुर के सेक्टर 13 स्थित क्षत्रिय विकास संस्थान भवन में हुए स्नेहमिलन में पूरे सप्ताह के कार्यक्रम तय किए गए। ग्रीष्मावकाश में एक अष्ट शिविर योजना बनाई गई जिसमें लगातार आठ प्रा.प्र.शिविर आयोजित होगी। इसके अलावा उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारी सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। 23 जनवरी को पुरोहितो की मादड़ी स्थित महाराणा प्रताप भवन में कार्यक्रम रखा गया वहीं 24 जनवरी को वीर दुर्गादास शाखा मीरां नगर में जयंती मनाई गई। 25 जनवरी को बी.एन. कॉलेज में कार्यक्रम हुआ वहीं 26 जनवरी को राजपूत धर्मशाला आवरी माताजी फतहनगर में कार्यक्रम हुआ जिसमें एक प्रा.प्र.शि. का भी प्रस्ताव आया। 27 जनवरी को पटेल सर्किल स्थित सुरेन्द्रसिंह रोलसाबसर के आवास पर व 28 जनवरी को मुछाला महादेव, बाठेड़ा खुर्द व चौहानों का गुड़ा में कार्यक्रम रखा गया। जयंती सप्ताह के दौरान हाड़ोती व मालवा प्रांत में 26 से 28 जनवरी तक सम्पर्क यात्रा का आयोजन हुआ। 26 को कोटा शहर के सहयोगियों से सम्पर्क कर संघशक्ति पथप्रेरक के ग्राहक बनाए। वहीं 27 जनवरी को झालावाड़ में श्री हरिश्चन्द्र छात्रावास में जयंती मनाई। 27 का ही शाम को मंदसौर जिले की अंगारी शाखा में जयंती मनाई। 28 जनवरी को रामसिंह पिपलिया व आंतरी माता में कार्यक्रम रखा। आंतरी माता के पश्चात् नीमच जिले के महागढ़ पहुंचे व वहां के बंधुओं के साथ जयंती मनाई। इस दल में संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली, प्रांत प्रमुख गोपाल शरण सिंह सहाड़ा व लक्ष्मण सिंह बाढ़ा पिचानौत साथ रहे। जयंती सप्ताह के तहत कर्मचारी प्रकोष्ठ की बाड़मेर इकाई ने 21 जनवरी को चौहटन के भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में कॅरियर मार्गदर्शन कार्यशाला आयोजित की जिसमें खनिज अभियंता भगवानसिंह, आयुर्वेद चिकित्सक स्वरूप सिंह मूंगेरिया, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी सुरेन्द्र प्रताप सिंह झिंझनियाली, संदर्भ शिक्षक गणपतसिंह हुरों का तला ने विभिन्न विषयों में कॅरियर संबंधी मार्गदर्शन दिया। संभागीयों द्वारा अनेक तरह के प्रश्न पूछे गए जिनका जवाब देकर समाधान किया गया। कार्यशाला में भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग के साथ-साथ दूसरे छात्रावासों के विद्यार्थी भी शामिल हुए। नागौर प्रांत में 24 जनवरी को छापड़ा शाखा में जयंती मनाई गई। 25 को अमर राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम हुआ वहीं 25 जनवरी को राजपूत कॉलोनी नागौर में कार्यक्रम रखा गया। 27 जनवरी को मानासर स्थित राजपूत कॉलोनी में कार्यक्रम हुआ वहीं 28 जनवरी को झठेरा स्थित शहीद सुमेरसिंह स्मारक पर पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। बनासकांठा प्रांत में 26 जनवरी को वलादर, पीलूड़ा व केसरगंज में जयंती का कार्यक्रम रखा गया। नारोली, शेराऊ व ताखुवा गांव के समाज बंधु नारोली शाखा के कार्यक्रम में शामिल हुए। थराद के भगवती हॉस्टल शाखा में भी 26 जनवरी को ही करबुण, सवराखा और वाघासण गांव के समाज बंधु करवुण शाखा में जयंती मनाने को एकत्र हुए। 27 जनवरी को दियोदर की प्रताप छात्रावास शाखा व कांकरेज तहसील की ऊंबरी शाखा में जयंती मनाई गई। शेखावाटी प्रांत के बग्गड़ कस्बे में 27 जनवरी को जयंती का कार्यक्रम रखा गया वहीं 28 जनवरी को दुर्गा महिला विकास संस्थान में जयंती मनाई व इस उपलक्ष में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। 26 जनवरी को कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ उपस्थित रहे। मुंबई प्रांत की विभिन्न शाखाओं ने भी 28 जनवरी (रविवार) को जयंती अपनी-अपनी शाखा में मनाई जिसमें नियमित आने वाले स्वयंसेवकों के साथ-साथ सहयोगियों को भी आमंत्रित किया। सूरत प्रांत की सभी शाखाओं ने मिलकर 28 जनवरी को कार्यक्रम रखा एवं पूज्य श्री को पुष्पांजलि अर्पित कर प्रेरणा देने की प्रार्थना की। 28 जनवरी को भारत के सुदूर दक्षिण में स्थित चैन्नई व केरल की त्रिशूर शाखा में भी जयंती मनाई गई। प्रताप युवा शक्ति के कार्यकर्ताओं द्वारा मदुराई में जयंती के उपलक्ष में 28 जनवरी को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस प्रकार अनेक स्थानों पर अलग-अलग प्रकार के कार्यक्रम कर जयंती सप्ताह का आयोजन किया गया।

कावतरा, जालोर

मालवा

मुम्बई

नागौर

श्री शंकरसिंह नाथावत

सेवानिवृत डी.एल.ओ.(पी.एन.बी.) की स्मृति में

जीवन पथ पर अग्रसर थे, थामें स्वजनों के हाथ।
चारों तरफ आनंद व वैभव का था उल्लास।।
परिवार जनों को माला के मणियों सा पिरोया।
स्वयं को धागा बना, मणियों के बीच समाया।।
धूप छांव में छाता बन, परिजनों पर छाये रहे।
धन्य-धन्य परिजनों के प्रति आपके भाव रहे।।
एका एक नभ मंडल से जैसे तारा टूटा।
अपने स्वजनों से आपका साथ छूटा।।
पीड़ा में हर स्वजन के साथ रहे।
स्वयं की पीड़ा को अकेले ही पी गए।।
परिवार असीम वेदना के सागर में डूब रहा।
भीगी पलकों से हर जगह आपको ढूंढ रहा।।
आप चिर निद्रा में सोये, हम भ्रम निद्रा में सोये रहे।
परमेश्वर कृपा करे आपकी सीख हमारे साथ सदा रहे।
मन आत्मा पीड़ा से आहत रहा।
आपकी स्मृति से सिवा अब न कुछ शेष रहा।।
श्रीमन नारायण से है हमारी करुण पुकार।
आपकी ज्योति को अपने में समाये निराकार।।
परमेश्वर के यहां हो यदि पुनर्जन्म का विधान।
तो आप पुनः पधारें करने कुल का उद्धार।।

विज्ञापन

विनम्रतापूर्वक आपकी स्मृति में यह शब्दांजलि अर्पित -

भवानी सिंह नाथावत एवं परिवार, ठि. बैण्यांकाबास, 8766067644

'मरणोत्सव मनाने की तैयारी करें'

ईश्वर के अतिरिक्त जीवन में कोई सत्य है तो वह है मृत्यु। लेकिन हमारी सभी तैयारियां इस सत्य को नकारने की होती हैं क्यों कि मरणोत्सव वह मना सकता है जिसने जीवन जीया हो। हम जीना ही नहीं जानते इसलिए मरने से भयभीत होते है, सत्य से दूर भागते हैं जबकि हमारे पूर्वजों ने मरणोत्सव मनाए थे। आगमन व प्रस्थान हमारे बस में नहीं है, भगवान ने हमें भेजा इसलिए हम आए और समय पूरा होने पर भगवान ही बुला लेते हैं लेकिन इस बीच यदि हमने भगवान के दिए जीवन को श्रेष्ठ तरीके से जीया है तो मरणोत्सव मनाया जाता है। इस शिविर में और संघ के सभी कार्यक्रमों में पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए गए श्रेष्ठ जीवन जीने के तरीके का हम अभ्यास करते है, सबल होने का प्रयास करते हैं, पवित्र होने का प्रयास करते हैं, हमारी इच्छाओं के साथ पनप रहे मल को छोड़ने का प्रयत्न करते है यह सब मरणोत्सव मनाने की ही तैयारी है। बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में 27 से 30 जनवरी तक आयोजित दम्पति

शिविर में विदाई संदेश देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा, सम्मान पैसा आदि पाने की इच्छा होती है लेकिन इसकी पूर्ति में कुछ झूठी प्रतिष्ठा, झूठा सम्मान और गलत पैसा भी आ जाता है, उससे मुक्त होना ही पवित्रता की ओर बढ़ना है। उन्होंने विदाई संदेश देते हुए कहा कि यहां जो अमृत तत्व मिला है उसके अनुरूप जीवन जीयेंगे तो सर्वत्र शिविर बन जाएगा। संघ ने हमारे लिए प्रकाश, आनन्द व ज्ञान का जो द्वार खोला है वह सदैव खुला रहे यही संघ का आशीर्वाद है। इससे पहले के कार्यक्रमों में उन्होंने शिविरार्थी दंपतियों को कहा कि विवाह कोई खेल नहीं बल्कि दो आत्माओं का मिलन है। पति वह होता है जो पालन करता है एवं पत्नी वह होती है जो पतित होने से बचाती है। लेकिन यह स्मरण रखें कि जब यह शरीर ही हमारा नहीं है तो शरीर के कारण उत्पन्न संबंध हमारे कैसे हो सकते हैं। चैतन्य आत्मा के साथ जड़ शरीर के संबंध के कारण जो चिज्जड़ग्रंथि बन गई है इसके कारण अपना लगता है लेकिन यह सब भगवान का है, उसका प्रसाद मानकर व्यवहार करें। उन्होंने मनुस्मृति के एक श्लोक को आधार बनाकर रहा कि उत्तरदायित्व निर्वहन की क्षमता ही श्रेष्ठता का मापदंड है। जड़ का कोई उत्तरदायित्व नहीं होता इसलिए उत्तरदायी चेतन उससे श्रेष्ठ है। प्राणी संसार में वायु, जल, खाद लेते हैं इसलिए उनका उत्तरदायित्व भी ज्यादा है। इसी प्रकार क्रम से मानव का उत्तरदायित्व सभी प्राणियों में अधकि है और क्षत्रिय केवल देने के लिए बना है इसलिए उसे सर्वश्रेष्ठ कहा है। शिविरार्थी दंपतियों को संघ के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि संघ समाज के लिए नहीं बल्कि स्वयं के ब्रह्म स्वरूप को जानने और उसमें विलय का मार्ग है। समाज सेवा तो ऐसा करने पर स्वतः ही होती है। जिस प्रकार भोजन शरीर को हष्ट पुष्ट करने के लिए होता है लेकिन स्वाद उसमें समाहित है उसी प्रकार संघ के स्वकल्याण के मार्ग में समाज सेवा स्वाभाविक रूप से अंतर्निहित है। इस शिविर में 55 वर्ष तक के दंपत्ति शामिल हुए। शिविर में शिक्षण का दायित्व महिला विभाग के प्रमुख जोरावरसिंह भादला ने निभाया।

इतिहासकारों की संगोष्ठी

जौहर स्मृति संस्थान के तत्वावधान में 21 जनवरी को चित्तौड़गढ़ में ख्यातिनाम इतिहासकारों की एक विचार गोष्ठी रखी गई जिसमें मीडिया जगत में हो रही बहसों में महाराणी पद्मनी के अस्तित्व को लेकर उठाए जा रहे प्रश्नों की आलोचना की गई। इतिहासकारों का मत था कि मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत से पहले के ग्रंथ छिताई चरित्र में महाराणी पद्मनी, रावल रतनसिंह, खिलजी एवं गोरा बादल का पर्याप्त उल्लेख है। इसके अलावा सन् 1303 के जौहर के 33 वर्ष बाद लिखे गए ग्रंथ में भी इन सबका पर्याप्त उल्लेख है। मौजूदा जौहर स्थल पर पुरातत्व विभाग द्वारा वर्षों पहले की गई खुदाई में भी जौहर के पर्याप्त सबूत मिले हैं। गोष्ठी की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष उम्मेदसिंह धोली ने की। गोष्ठी में मेवाड़ राज परिवार के बड़वा बाबूसिंह टोंकरा ने कहा कि उनके परिवार के पास उपलब्ध वंशावली में इन सभी का उल्लेख है। इस विचार गोष्ठी में प्रदेश भर के ख्यातिनाम इतिहासकार शामिल हुए। जैसलमेर से संघ के स्वयंसेवक रतनसिंह बडोड़ागांव भी इसमें शामिल हुए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org